IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 3, Issue 1, August 2023 Impact Factor: 7.301

Hkkjrh; Kku&ijaijk&fujarjrk ,oa ifjorZu

MkW- /khjUnz flag

vflLVsUV izksQslj&lekt'kkL=

gseorh uUnu cgqxq.kk jktdh; LukrdksÙkj egkfo|ky;] uSuh ç;kxjkt

Lkkjka'k

भारतीय ज्ञान–परंपरा एक अनूठी परंपरा है जो परिवर्तनशील होते हुए भी अपनी मूलभूत नाभिकीय विशेषताओं को यथावत संजोकर रखी हुई है। इसके नाभिकीय मूल्य आज भी यथावत् बने हुए हैं। जो भी परिवर्तन आए हैं, वे परिवर्तन भारतीय ज्ञान–परंपरा के परिधीय मूल्यों में आए हैं। भारतीय ज्ञान–परंपरा दो तरफा चलती है एक तरफ वह अपनी परिधि का विस्तार करती है अर्थात् समय के साथ उपयोगी मूल्यों को अपने भीतर जोड़ लेती है वहीं दूसरी तरफ वह अपनी परिधि का संक्षेपण भी करती है अर्थात् अनुपयोगी परंपराओं, रूढ़ियों को भारतीय ज्ञान–परंपरा पुरातन वस्त्रों की भांति त्याग भी देती है। भारतीय चिंतन परंपरा समय के साथ आत्मविस्तार, नवीनीकरण, परिमार्जन संक्षेपण आदि के माध्यम से समाजोपयोगी बनी रहती है।

eq[; 'kCn& ifjf/k dk ladqpu] vkRe foLrkj] vkºckã.k] ipe on] lIre onkx] :f<+;k] :f<+;ksa dk ifjektZu] lkoZdkfyd /keZ] dkylkis{k /keZ